REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2026

कोल जनजाति की सनातनता और आधुनिक चुनौतियों का अध्ययन

रामपति रावत
शोधार्थी इतिहास
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ. श्रीमती पुष्पा दुबे
सहायक प्राध्यापक इतिहास
राजभानु सिंह स्मारक महाविद्यालय, मनिकवार, जिला रीवा (म.प्र.)

सारांश –

'प्रस्तुत अध्ययन कोल जनजाति की सनातन सांस्कृतिक परंपराओं तथा समकालीन युग में उनके समक्ष उपस्थित आधुनिक चुनौतियों का समग्र एवं विश्लेषणात्मक विवेचन प्रस्तुत करता है। कोल जनजाति की सामाजिक–सांस्कृतिक संरचना प्राचीन जीवन–मूल्यों,प्रकृति–केन्द्रित दृष्टिकोण तथा सामुदायिक चेतना पर आधारित रही है, जिसने उनकी सांस्कृतिक सनातनता को पीढ़ी–दर–पीढ़ी सुरक्षित रखा है। उनके धार्मिक विश्वास, रीति–रिवाज, लोकपर्व, पारंपरिक ज्ञान और सामाजिक संस्थाएँ इस सनातन परंपरा की सशक्त अभिव्यक्ति हैं। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि कोल जनजाति की सनातनता केवल अतीत से जुड़ी हुई कोई स्थिर अवधारणा नहीं है, बल्कि यह एक सजीव और गतिशील सांस्कृतिक प्रक्रिया है, जो समय के साथ स्वयं को अनुकूलित करती रही है। कृषि–आधारित जीवन, वनोपज संग्रह, प्रकृति–पूजन और सामूहिक निर्णय–प्रणाली ने कोल समाज को सांस्कृतिक रूप से आत्मनिर्भर और संगठित बनाए रखा है। समकालीन परिप्रेक्ष्य में शिक्षा, औद्योगीकरण, नगरीकरण, बाजारवादी अर्थव्यवस्था, वन कानूनों तथा वैश्वीकरण के प्रभाव से कोल जनजाति के लोकजीवन और सांस्कृतिक संरचना के समक्ष अनेक आधुनिक चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं। पारंपरिक आजीविका के स्रोतों का ह्रास, सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन, युवाओं का पलायन तथा बाह्य सांस्कृतिक प्रभावों का दबाव कोल समाज की सनातन परंपराओं के संरक्षण में बाधक सिद्ध हो रहा है। अध्ययन यह भी प्रतिपादित करता है कि इन चुनौतियों के बावजूद कोल जनजाति अपनी सांस्कृतिक अस्मिता को बनाए रखने के लिए निरंतर संघर्षरत है। लोकपर्वों, पारंपरिक अनुष्ठानों, सामाजिक संस्थाओं और सामुदायिक एकता के माध्यम से वे अपनी सनातन विरासत को आधुनिक संदर्भों में पुर्नस्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं। इस प्रकार कोल जनजाति की सनातनता और आधुनिक चुनौतियों के मध्य विद्यमान द्वंद्व को रेखांकित करते हुए यह स्थापित करता है कि कोल समाज की सांस्कृतिक विरासत न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि समकालीन विकास एवं सांस्कृतिक संरक्षण के विमर्श में भी अत्यंत प्रासंगिक है।

मुख्य शब्द – कोल जनजाति, सनातनता, आधुनिक चुनौतियाँ।

प्रस्तावना –

भारतीय समाज की संरचना बहुआयामी और बहुसांस्कृतिक रही है, जिसमें जनजातीय समुदायों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। ये समुदाय न केवल भारत की प्राचीन सांस्कृतिक परंपराओं के संवाहक रहे हैं, बल्कि सामाजिक संगठन, प्रकृति–केन्द्रित जीवन–दृष्टि तथा सामुदायिक मूल्यों के जीवंत उदाहरण भी प्रस्तुत करते हैं। कोल जनजाति, जो मुख्यतः मध्य भारत के क्षेत्रों–मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़ तथा झारखंड में निवास करती है, अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान, सनातन परंपराओं और लोकजीवन के कारण विशेष महत्व रखती है।

कोल जनजाति की सनातनता उनकी सामाजिक–सांस्कृतिक संरचना में अंतर्निहित उन परंपराओं में परिलक्षित होती है, जो प्रकृति–पूजन, पूर्वज–आराधना, सामूहिक जीवन–प्रणाली तथा परंपरागत ज्ञान पर आधारित हैं। कृषि, वनोपज संग्रह और श्रम आधारित आजीविका ने कोल समाज को प्रकृति के साथ सहजीवी संबंध में बाँधे रखा है। उनके पर्व–त्योहार, लोकगीत, लोकनृत्य और अनुष्ठान न केवल सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ हैं, बल्कि सामाजिक एकता और सांस्कृतिक निरंतरता के सशक्त माध्यम भी हैं।

समकालीन युग में औपनिवेशिक एवं उत्तर–औपनिवेशिक नीतियों, वन कानूनों, शिक्षा, नगरीकरण, औद्योगीकरण तथा वैश्वीकरण के प्रभावों ने कोल जनजाति के पारंपरिक जीवन–तंत्र को गहराई से प्रभावित किया है। आधुनिक विकास की प्रक्रियाओं ने जहाँ एक ओर शिक्षा, संचार और आर्थिक अवसरों के नए द्वार खोले हैं, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक आजीविका,सांस्कृतिक मूल्यों और सामुदायिक संरचना के समक्ष गंभीर चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। इस संदर्भ में कोल जनजाति की सनातन परंपराओं और आधुनिक चुनौतियों के मध्य उत्पन्न द्वंद्व का अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य कोल जनजाति की सनातन सामाजिक–सांस्कृतिक परंपराओं का विश्लेषण करते हुए उनके समक्ष उपस्थित आधुनिक चुनौतियों की पहचान करना है। इसके अंतर्गत सांस्कृतिक निरंतरता और परिवर्तन, परंपरा और आधुनिकता के अंतःसंबंध तथा कोल समाज की सांस्कृतिक अस्मिता के संरक्षण की संभावनाओं का सम्यक् अध्ययन किया गया है। यह शोध न केवल जनजातीय अध्ययन के क्षेत्र में योगदान देगा, बल्कि नीति–निर्माण,सांस्कृतिक संरक्षण और समावेशी विकास के विमर्श को भी सुदृढ़ आधार प्रदान करेगा।

विश्लेषण –

कोल जनजाति की सनातनता उनके सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन की वह आधारशिला है, जो उन्हें ऐतिहासिक निरंतरता और सांस्कृतिक विशिष्टता प्रदान करती है। यह सनातनता केवल धार्मिक आस्थाओं तक सीमित न होकर सामाजिक संगठन, आर्थिक गतिविधियों, पारंपरिक ज्ञान तथा लोकाचार में व्यापक रूप से व्याप्त है। कोल समाज की जीवन–दृष्टि प्रकृति–केन्द्रित रही है, जिसमें वन, भूमि, जल और जीव–जगत के साथ सहजीवी संबंध स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं। इस संदर्भ में उनकी संस्कृति एक ऐसी समग्र प्रणाली के रूप में उभरती है, जो मानव और प्रकृति के संतुलित सह–अस्तित्व पर आधारित है।[1]

कोल जनजाति की सनातन परंपराओं का प्रमुख आधार प्रकृति–पूजन और पूर्वज–आराधना है। ग्राम–देवता, वन–देवता तथा कुल–देवता की पूजा न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक है, बल्कि सामाजिक अनुशासन और नैतिक मूल्यों की स्थापना का भी माध्यम है। वेरियर एल्विन के अनुसार जनजातीय समाजों में धर्म, संस्कृति और दैनिक जीवन के बीच कोई स्पष्ट विभाजन नहीं होता, बल्कि ये सभी परस्पर अंतर्संबद्ध होते हैं।[2] कोल समाज में यह तथ्य विशेष रूप से दृष्टिगोचर होता है, जहाँ पर्व–त्योहार कृषि–चक्र और प्राकृतिक परिवर्तनों से सीधे जुड़े होते हैं।

सामाजिक संरचना की दृष्टि से कोल जनजाति अपेक्षाकृत समानतामूलक और सामुदायिक रही है। पंचायत, मुखिया और परंपरागत परिषद जैसी संस्थाएँ सामाजिक नियंत्रण, विवाद निपटान और सामूहिक निर्णय–प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह व्यवस्था लिखित कानूनों की अपेक्षा परंपरा और नैतिकता पर अधिक आधारित होती है। के.एस. सिंह के अनुसार जनजातीय समाजों की यह संरचना उन्हें सांस्कृतिक रूप से आत्मनिर्भर बनाए रखने में सहायक सिद्ध हुई है।[3]

आधुनिक युग में औपनिवेशिक तथा उत्तर–औपनिवेशिक नीतियों ने कोल जनजाति की इस सनातन व्यवस्था को गहराई से प्रभावित किया है। वन कानूनों, भूमि–राजस्व नीतियों तथा प्रशासनिक हस्तक्षेपों के कारण पारंपरिक आजीविका के स्रोतों में संकुचन आया, जिससे सामाजिक–सांस्कृतिक असंतुलन उत्पन्न हुआ। डी.एन.

मजूमदार के अनुसार औपनिवेशिक शासन ने जनजातीय समाजों को उनकी प्राकृतिक संसाधन–आधारित जीवन–प्रणाली से अलग कर दिया, जिसके दूरगामी सांस्कृतिक परिणाम हुए।[4]

समकालीन परिप्रेक्ष्य में शिक्षा, नगरीकरण, औद्योगीकरण और वैश्वीकरण ने कोल जनजाति के समक्ष नई चुनौतियाँ प्रस्तुत की हैं। एक ओर शिक्षा और संचार के माध्यम से सामाजिक जागरूकता बढ़ी है, वहीं दूसरी ओर बाजारवादी अर्थव्यवस्था और बाह्य सांस्कृतिक प्रभावों ने पारंपरिक मूल्यों को प्रभावित किया है। युवा पीढ़ी का नगरीय क्षेत्रों की ओर पलायन सांस्कृतिक हस्तांतरण की प्रक्रिया को कमजोर करता दिखाई देता है। तथापि, यह भी स्पष्ट है कि कोल समाज अपनी सनातन परंपराओं को पूरी तरह त्यागने के स्थान पर उन्हें आधुनिक संदर्भों में पुनर्परिभाषित करने का प्रयास कर रहा है।

इस प्रकार, कोल जनजाति की सनातनता और आधुनिक चुनौतियों का विश्लेषण यह प्रतिपादित करता है कि उनकी संस्कृति स्थिर न होकर गतिशील और अनुकूलनशील है। परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित करने की यह प्रक्रिया कोल समाज की सांस्कृतिक जीवंतता का प्रमाण है तथा भारतीय जनजातीय समाज की व्यापक समझ के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष –

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में यह स्पष्ट रूप से प्रतिपादित किया जा सकता है कि कोल जनजाति की सनातनता उनकी सामाजिक–सांस्कृतिक पहचान की मूल आधारशिला है, जो ऐतिहासिक निरंतरता, सामुदायिक चेतना तथा प्रकृति–केन्द्रित जीवन–दृष्टि में निहित है। कोल समाज की परंपराएँ–प्रकृति–पूजन, पूर्वज–आराधना, सामूहिक जीवन–प्रणाली एवं पारंपरिक सामाजिक संस्थाएँ–न केवल उनके लोकजीवन को संरचित करती हैं, बल्कि सांस्कृतिक अस्मिता के संरक्षण का भी सशक्त माध्यम रही हैं। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि कोल जनजाति की सनातनता किसी स्थिर या जड़ सांस्कृतिक संरचना का रूप नहीं है, बल्कि यह एक गतिशील एवं अनुकूलनशील प्रक्रिया है, जो समय और परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को पुनःसंरचित करती रही है। परंपरागत कृषि, वनोपज–आधारित आजीविका, लोकपर्व, अनुष्ठान तथा मौखिक परंपराएँ इस सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही हैं। औपनिवेशिक एवं उत्तर–औपनिवेशिक नीतियों, वन कानूनों, नगरीकरण, औद्योगीकरण और वैश्वीकरण के प्रभावों ने कोल जनजाति के पारंपरिक जीवन–तंत्र को गहराई से प्रभावित किया है। इन आधुनिक चुनौतियों के परिणामस्वरूप पारंपरिक आजीविका के स्रोतों में संकुचन, सामाजिक संरचना में परिवर्तन तथा सांस्कृतिक मूल्यों के क्षरण की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है। विशेष रूप से युवा पीढ़ी का पलायन और बाजारवादी संस्कृति का प्रभाव सांस्कृतिक संक्रमण की प्रक्रिया को तीव्र करता है। तथापि, अध्ययन यह भी प्रतिपादित करता है कि कोल जनजाति आधुनिक चुनौतियों के समक्ष निष्क्रिय नहीं रही है। सांस्कृतिक पुनरुत्थान के प्रयास, लोकपर्वों का संरक्षण, सामुदायिक संस्थाओं की निरंतरता तथा पारंपरिक ज्ञान–प्रणालियों के पुनर्सक्रियण के माध्यम से कोल समाज परंपरा और आधुनिकता के मध्य संतुलन स्थापित करने का प्रयास कर रहा है। इस प्रकार कोल जनजाति की सनातनता और आधुनिक चुनौतियों के मध्य विद्यमान द्वंद्व भारतीय जनजातीय समाज की व्यापक सामाजिक–सांस्कृतिक स्थिति को समझने में सहायक सिद्ध होता है। कोल समाज की सांस्कृतिक विरासत न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि समकालीन संदर्भ में सांस्कृतिक संरक्षण, सामाजिक न्याय और समावेशी विकास की नीतियों के निर्माण हेतु भी अत्यंत प्रासंगिक है। यह अध्ययन भविष्य के अनुसंधानों के लिए एक सुदृढ़ वैचारिक आधार प्रदान करता है।

संदर्भ –

[1] के.एस. सिंह – भारत में जनजातीय समाज, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2012, पृष्ठ 32–35।

[2] वेरियर एल्विन – मध्य भारत की जनजातीय दुनिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस,नई दिल्ली, 1964, पृष्ठ 98–104।

[3] के.एस. सिंह – भारत में जनजातीय आंदोलन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2022, पृष्ठ 55–60।

[4] डी.एन. मजूमदार – भारत की जातियाँ और संस्कृतियाँ, एशिया पब्लिशिंग हाउस, बॉम्बे, 1951, पृष्ठ 210–215।